गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अथवा शिक्षा में गुणवत्ता

(Quality Education / Quality in Education)

शिक्षा में गुणवत्ता को परिभाषित करना आसान कार्य नहीं है। जब हम अपने सभी व्यक्तियों के लिए गुणवत्तायुक्त शिक्षा की बात करते हैं तो इस सम्प्रत्यय को अच्छी तरह समझना आवश्यक है अर्थात गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु मूलभूत आवश्यकताएं क्या हैं? क्या इसका तात्पर्य व्यक्ति व समाज की आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी होना है अथवा प्रत्येक बच्चे को शिक्षा प्राप्ति का अधिकार दिलाना है।

ग्लोबल मॉनीटरिंग रिपोर्ट 2005 के अनुसार गुणवत्ता युक्त शिक्षा हेतु दो सैद्धान्तिक विशेषताओं का होना आवश्यक है — सीखने वाले को संज्ञानात्मक विकास को लक्ष्य बनाना हर शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य होना चाहिए और दूसरा सिद्धान्त इस बात पर बल देता है कि शिक्षा की भूमिका का निर्धारण उत्तरदायित्वपूर्ण नागरिकों में मूल्यों व अभिवृद्धि का विकास व उनके सृजनात्मक व संवेगात्मक विकास पर बल देने के सन्दर्भ में होना चाहिए। गुणवत्ता यह निर्धारित करती है कि बच्चे कितना व कितनी अच्छी तरह से अपने व्यक्तित्व व सामाजिक विकास हेतु सीख पाते हैं। डकार (Dakar) में आयोजित शिक्षा सम्मेलन (2000) में भी शिक्षण शास्त्रीय पद्धति के विकास पर बल दिया गया। क्योंकि शिक्षण व अधिगम प्रक्रिया द्वारा ही पाठ्यक्रम को जीवन बनाया जा सकता है जिससे कक्षा में क्या पढ़ाया गया है, इसके गुणवत्ता का निर्धारण होता है।

Scanned with CamScanner

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के आयाम

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु कुछ आयामों की आवश्यकता है जिन्हें '6 As' का नाम दिया जा सकता है। ये आयाम/तत्व निम्न हैं —

1. आंकलन (Assessment) →

शिक्षा व्यवस्था का निरन्तर आंकलन करने से शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर सुधारने में मदद मिलती है। वे देश जो अपनी शिक्षा व्यवस्था का स्तर बनाये रखना नहीं चाहते उन्हें उनके उद्देश्यों को प्राप्त करने में या सुधार करने में कठिनाई होती है। इस क्षेत्र में सफलता का एक उदाहरण फ़िनलैंड देश से लिया जा सकता है। जहां आंकलन हेतु अन्तर्राष्ट्रीय परीक्षणों का प्रयोग व प्रतिपुष्टि के प्रयोग में अभूतपूर्व सफलता मिली हो।

2. स्वायत्तता (Autonomy)

स्कूलों में सुधार हेतु गुणवत्ता सुधार आवश्यक है इसका तात्पर्य विद्यालयों को संसाधनों के प्रयोग हेतु स्वायत्तता देने से है ताकि वे अपने विद्यालय को प्रतिद्वन्द्वितापूर्ण तरीके से सुधार सकें। जापान, कोरिया ऐसे देश हैं जहां विज्ञान में छात्रों की निष्पादन क्षमता औसत से ऊँची है तथा इनकी निष्पादन क्षमता पर छात्रों के सामाजिक आर्थिक स्तर का औसत से कम प्रभाव पड़ता है। स्वायत्तता की अधिक इस बात पर निर्भर करती है कि क्या शिक्षा व्यवस्था को बदलने हेतु बढ़ती हुई स्वायत्तता के साथ-साथ उत्तरदायित्व पूर्ण निर्वाह में भी वृद्धि हो रही है? यदि है तो इस दिशा में स्वायत्तता प्रदान की जानी चाहिए।

3. जवाबदेही (Accountability) →

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि स्वायत्तता व उत्तरदायित्व एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। जवाबदेही कार्य व शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। इसके अन्तर्गत अच्छी शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व स्थानीय अधिकारियों, विद्यालय के प्रधानाचार्य, शिक्षक व छात्रों की सामूहिक सहभागिता पर निर्भर कर दिया जाता है तथा उन्हें संसाधनों के वितरण व स्कूली कार्यान्वयन के उत्तरदायित्व सौंप दिये जाते हैं। एक स्वायत्तता पर आधारित संरचना में विद्यालय के प्रधानाचार्य वित्तीय संसाधनों के प्रभावी उपयोग हेतु जवाबदेह होते हैं। इसी प्रकार विद्यालय के प्रधानाचार्य अभिभावकों व स्थानीय अधिकारियों के प्रति भी अपने विद्यालय में अधिगम वातावरण में सुधार करके व वांछित परिणाम देने हेतु उत्तरदायी होते हैं।

Scanned with CamScanner

④ शिक्षक पर ध्यान (Attention to Teacher) =>

विश्वस्तरीय अध्ययन यह बताते हैं कि एक अच्छा शिक्षक अधिगम प्रक्रिया में मूल्यों को भी शामिल कर लेता है छात्रों के अधिगम परिणामों को प्रभावी बनाता है। छात्रों के अच्छे निष्पादन परिणाम दिखाने वाले विद्यालय, शिक्षकों का चुनाव भी कई स्तरों पर करते हैं। यह स्क्रीनिंग उन्हे यह सुनिश्चित करने में मदद करती है कि प्रभावी शिक्षक हेतु आवश्यक कौशल व प्रतिभाएँ क्या हैं वे सेवाकालीन प्रशिक्षण शिक्षकों को अपने कौशलों को बनाये रखने में मदद करता है। अतः वे शिक्षक की शिक्षण प्रभाविता को बढाने हेतु सभी उपायों पर ध्यान देते हैं।

⑤ पूर्व बाल्यकाल विकास पर ध्यान (Attention to E.C. Development)

पूर्व-बाल्यकाल विकास (Early childhood Development - E.C.D.) सम्भवतः सबसे प्रभावी शैक्षिक निवेश है। अनुभविक आँकड़े बताते हैं कि गुणवत्तायुक्त पूर्व बाल्यकाल कार्यक्रम शैक्षिक सफलता को बढ़ाते हैं

⑥ संस्कृति पर से ध्यान (Attention to Culture) =>

संस्कृति शिक्षा की गुणवत्ता का एक अहम् हिस्सा है परन्तु इससे अक्सर नजर अन्दाज किया जाता है। पाठ्यक्रम की भाषा के रूप में मातृभाषा का प्रयोग कई देशों में विवादित विषय रहा है। कुछ लोगों के लिए यह मुद्दा राजनीति से जुड़ा है तो कुछ के लिए इसे धार्मिक मूल्यों से जोड़ा गया है और शेष कुछ लोगों के लिए यह बहस या विरोध का मुद्दा मात्र है। कई देशों में बड़ी संख्या में छात्र घर पर ही मातृभाषा का प्रयोग नहीं करते हैं, जिसका नकारात्मक प्रभाव शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ता है। शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में पाया है कि वे विद्यालय जो छात्रों के अधिगम हेतु मातृभाषा का प्रयोग करते हैं वहाँ छात्रों की उपस्थिति प्रतिशत व विकास दर अधिक होती है और अपव्यय व अवरोधन में कमी आती है। छात्र अपनी मातृभाषा द्वारा ही बेहतर सीख सकते हैं अतः पहले उन्हे अपनी मातृभाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए व तत्पश्चात् राष्ट्रीय भाषा का ज्ञान कराया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner